जनपद फ़तेहपुर की प्रस्तुति

संकलन

मिशन शिक्षण संवाद

1857 की क्रान्ति के प्रमुख नेता

1.रानी लक्ष्मी बाई
2.बहादुर शाह ज़फ़र
3.मंगल पाण्डेय
4.बेगम हजरत महल
5.नाना साहब
6.तात्या टोपे
7.कुँवर सिंह
8.मौलवी अहमदुल्लाह

मार्गदर्शन
श्रीमती नीलम सिंह भदौरिया
जनपद संयोजक फ़तेहपुर

संकलन- टीम मिशन शिक्षण संवाद।

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक 06/08/2020

रानी लक्ष्मी बाई

दिन गुरुवार

कानपुर के बिठूर की,
वो मनु छबीली थी।
नाना के संग खेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी।
बचपन से ही तीर कमान,
तलवार का शौक रखती थी।
निर्भय निडर वीरता की वह,
निशानी सी प्रतीत होती थी।।
ब्याह हुआ रानी बन आयी,
झाँसी में खुशियां आयी थी।
राज्य हड़प नीति डलहौजी की,
रानी के सामने न चल पायी थी।
होश उड़ गए अंग्रजों के जब,
बनकर चंडी रण में कूदी थी।
मातृभूमि पर मर मिटने की,
सीख वो सिखाने आयी थी।।

रचयिता
हेमलता यादव (स०अ०)
प्रा० वि० बेतीसादात,
भिटौरा, फतेहपुर।

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक
08/08/2020

बहादुर शाह

दिन
शनिवार

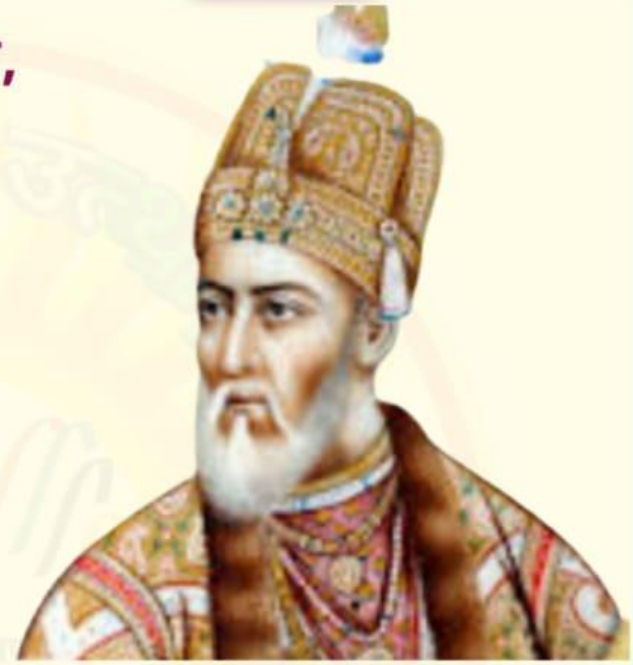

हिन्दुस्तान की सरजमीं पर जन्मा,
एक ऐसा मुगल बादशाह,
वतन के लिए कुर्बान हो गया,
नाम था उसका बहादुर शाह।।

अंग्रेजों के ख़िलाफ़ बगावत में,
जंग का नेतृत्व किया,
बेटा, पोता सब वार दिया,
न की जान की परवाह।।

अंग्रेजों ने छल-कपट किया,
आज़ादी का रुख़ बदल दिया,
क़ैद कर लिया बहादुर को,
रंगून उसको भेज दिया।।

उर्दू का शायर भी था,
महबूब था वतन को मानता,
रंगून में ही दफ़न हो गया,
अधूरी रह गई वापसी की चाह।।

ज़ेबा अतीक़

रचनाकर
ज़ेबा अतीक
सहायक अध्यापक
प्रा०वि०बहरौली 2
वि०ख०-मलवां, जनपद-फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक 09/08/2020

मंगल पाण्डेय

दिन रविवार

बलिया का नगवां गाँव जहाँ,
मंगल सा तारा उदय हुआ।
दिया नारा "मारो फिरंगी को"
आंदोलन का आगाज किया।

अंग्रेजी सत्ता के सम्मुख,
जब वीर खड़ा देखा जग ने।
फिर सोया भारत जाग उठा,
रणधीर खड़े हुए मग-मग में।

अंग्रेजी सत्ता के सम्मुख,
जब वीर खड़ा देखा जग ने।
फिर सोया भारत जाग उठा,
रणधीर खड़े हुए मग-मग में।

चर्बी कारतूस और गोली बस,
संयोग महज या बहाना था।
गोरों की सत्ता को खदेड़,
भारत से दूर भगाना था।।

गरिमा द्विवेदी

रचना
गरिमा द्विवेदी(स. अ.)
प्राथमिक विद्यालय मलवाँ-2
मलवाँ, फ़तेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक 10/08/2020

बेगम हजरत महल

दिन सोमवार

मोहम्मद खानम सन् 1820 में ,
फैजाबाद में थी जन्मी,
बचपन उनका देखो,
गुजरा था बहुत गरीबी में।।

वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल बनकर,
सम्मान अपना हासिल किया,
बिरजिस कादर नामक बालक को जन्म देकर,
इफ्तिखार-उन निशा का खिताब हासिल किया।।

कुशल प्रशासिका, क्रांतिकारी, रणनीतिकार बन,
अपने राज्य का मान बढ़ाया था,
12 वर्ष के कादर को अवध की गद्दी में बैठा कर,
1857 की क्रांति में अंग्रेजी सेना का मुकाबला किया था।।

अपने स्वाभिमान के बल पर,
अन्त समय नेपाल में ठिकाना पाया,
सन् 1857 में ही मृत्यु को पाकर,
भारत में अपना नाम अमर किया।।

साधना

रचना
साधना
प्रधानाध्यापिका
कंपोजिट स्कूल ढोढ़ियाही
तेलियानी, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक 11/08/2020

नाना साहब

दिन मंगलवार

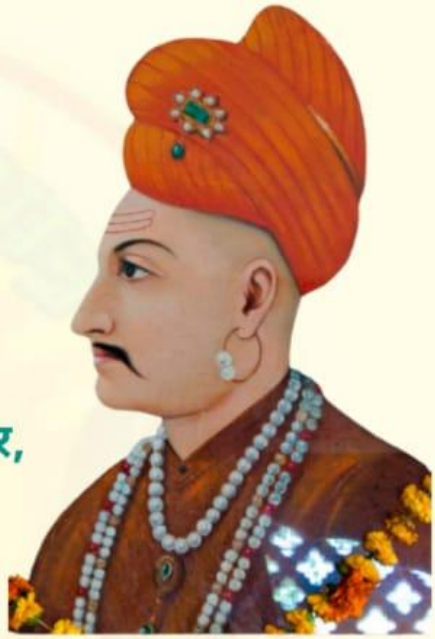

स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शिल्पकार,
नाना साहब, धोडूपंत, बालाजी राव।
नमन है अंग्रेजी क्रांति के सूत्रधार,
जनमानस में देशभक्ति का किया संचार।

पेशवा बाजीराव बल्लाट द्वितीय ने,
बनाया उत्तराधिकारी नाना साहब को।
लॉर्ड डलहौजी ने ना माना उत्तराधिकार,
पेंशन देने को किया इनकार।

भड़की थी ज्वाला 1857 में,
कानपुर से नाना के नेतृत्व में।
किया अंग्रेजी हुकूमत का बहिष्कार,
संभाला कानपुर पेशवा का कार्यभार।

सुमन पांडेय

बिठूर में है नाना राव का किला,
सती चौरा कांड जहाँ पर हुआ।
फैली क्रांति अवध, दिल्ली, झाँसी तक,
जीता सभी को, थे कुशल राजनीतिज्ञ।

रचना
सुमन पांडेय
प्रधानाध्यापिका
प्रा.वि.- टिकरी मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक
12/08/2020

तात्या टोपे

दिन
बुधवार

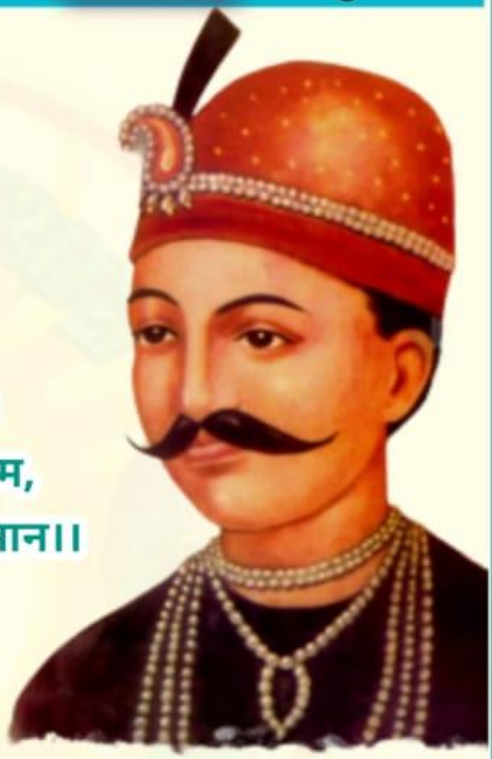

भारत भूमि क्रान्तिकारियों,
शूरवीरों के रंग में रंगी है।
स्वंतत्रता क्रान्ति की मशालें।
यहाँ की पावन भूमि में जलीं हैं।।

सन् 1814 में जन्मी थी एक मशाल,
नासिक का येवला गाँव था बड़ा विशाल।
बालक था फौलादी, तात्या था उसका नाम,
बाजीराव ने टोपी देकर किया उसका सम्मान।।

सन् 1857 संग्राम की यह महान कड़ी थी,
क्रान्ति की एक कहानी उससे भी जुड़ी थी।
कानपुर, झाँसी में अंग्रेजों के दांत कर दिये खट्टे।
अदम्य पराक्रम, साहस देखकर सभी थे हक्के-बक्के।।

नाना साहब, लक्ष्मीबाई और जफर के बाद,
उसने ही संभाली थी क्रान्ति की मशाल ।
मानसिंह के विश्वासघात ने यह जोत बुझाई थी,
18 अप्रैल सन् 1859 में तात्या ने फांसी पायी थी।।

रचयिता
इला सिंह
उच्च प्राथमिक विद्यालय पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक
13/08/2020

कुंवर सिंह

दिन
गुरुवार

1777 में जन्मे कुँवर सिंह,
दहाड़ थी उनकी देखो जैसे सिंह।
बिहार के जगदीशपुर गाँव में,
पिता बाबूसाहब थे भोज परिवार में।।

1857 की क्रांति में, हिन्दू मुस्लिम ने विप्लव मचाया,
अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने को पूरा जोर लगाया।
80 वर्ष की उम्र में गजब का उनमें जोश था,
बहादुरी का साहस उनका देखो सरफ़रोश था।

दानापुर के सिपाहियों का इनको मिला सहारा,
अंग्रेजों से लड़ जीत लिया देखो उन्होंने आरा।
बाँदा, गोरखपुर, रीवा, बनारस, रामगढ़ में,
विप्लव किया बलिया और आजमगढ़ में।।

23 अप्रैल 1858 को भले ही युद्ध में हुए घायल,
परन्तु उनकी वीरता के अंग्रेज भी हो गए कायल।
माँ भारती के वीर सपूत को नमन सौ-सौ बार है,
इसकी वीरता का साक्षी आज भी सारा बिहार है।

सुधांशु श्रीवास्तव

रचनाकार
सुधांशु श्रीवास्तव (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय मणिपुर
ऐरायां, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

दिनाँक
14/08/2020

मौलवी अहमदुल्ला

दिन
शुक्रवार

ब्रिटिश शासन से लोहा लेने वाले।
1857 विद्रोह के 'लाइटहाउस' कहलाने वाले।
डंक शाह,नक्कर शाह जैसे नामों वाले।
वो हैं मौलवी अहमदुल्ला फैजाबाद वाले।

रोटी व कमल के फेरे की सूझ देने वाले।
अंग्रेजों को नाकों चने चबवाने वाले।
बेगम हजरत महल का अवध में साथ देने वाले।
विद्रोही सेना का कुशल नेतृत्व करने वाले।

हिन्दू-मुस्लिम एकता की बेल सींचने वाले।
आजादी की अलख जगाने वाले।
अंग्रेजों का मुकाबला डटकर करने वाले।
वो 'फौलादी शेर' कहलाने वाले।

अंग्रेजों के चंगुल में न फँसने वाले,
और न ही उनके आगे झुकने वाले।
अपनों की धोखेबाज़ी से शहीद होने वाले,
वो देशभक्त अहमदुल्ला फैजाबाद वाले।

गुलफ्शां

रचनाकार
गुलफ्शां (स०अ०)
प्रा० वि० केवटरा बेंता
देवमई, फतेहपुर